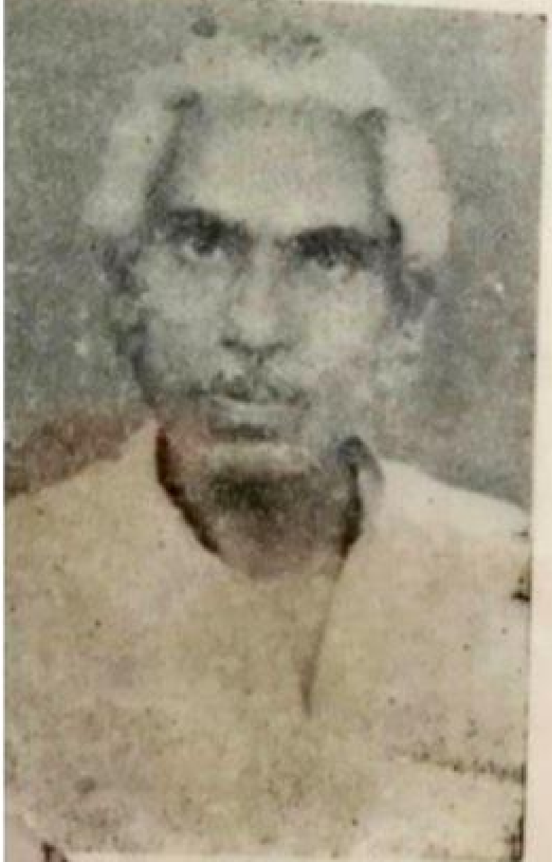
मेहर अथवा महरा स्वयं एक प्राचीन क्षत्रिय वंश माना गया है। इतिहास में अनेक ऐसे उल्लेख मिलते हैं जहाँ विभिन्न क्षत्रिय वंशों के साथ “महरा” शब्द का प्रयोग हुआ



“मैं अपने को कश्यप राजपूत कहूँगा, लिखूँगा, लिखवाऊँगा और अपने नाम के साथ अपना गोत्र (वंश)अवश्य जोड़ूँगा

लेखक के शब्द



मैं इस योग्य कदापि नहीं जो जाति बंशावलि लिख सकूं यह तो हमारे पूर्वज राजपूत राजाओं एवं ऋषियों के इतिहास के बिखरे हुये पृष्ठों के कमल रुपी पंखडिया हैं ।

इन कमल रुपी पुष्पों को कश्यप जाति के श्री चरण–कमलों में सादर समर्पित करता हूं—

..जपूती शान के दीवानों कौम के परवानों नकली परशुराम ने कुछ र एजेन्ट छोड़ रखे हैं , जिन्होंने कश्यप जाति को गुमराह कर, अनुसचित ूल काष्ट में मिलाने का बीड़ा उठाया है । यह लोग आप को लालच का का देगे, आप जानते है लालच एक बहुत बड़ा धोका है । समझदार दमी ऐसे धोके में नही आते । मैंने अपनी प्यारी जाति को समय-समय धोके वाजों से सावधान किया और करता ही रहूंगा । मैं दिल्ली से कलने वाले (कश्यप निर्माण पत्र) में परशुराम को तीन वार चेलैंज दे का हूं । कि हम राजपूत हैं । इसी कारण कि यह सत्य अहिंसा रुपी बंशा- ी जाति के हर घर में पहुचे जिसके द्वारा नकली परशुराम रुपी विष- यों को प्रास्त कर सके । तो मैं अपने प्रयत्न को सफल समझूगा ,

लेखक :—

यस्य स्मरण मात्रेण जन्म संसार बन्धनात ।
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभु विष्णवे ।

-जिसके स्मरण मात्र से मनुष्य जन्म और संसार के ब[न्धन से]
छूट जाता है । उस विष्णु भगवान को बार २ नमस्का[र]

हमारे गोत्र भेद : एवम् वंश

तबर, तोमर, तुराहे, कश्यप, मौर्य्य, हाड़ा, सिसो[दिया]
[शौ]क्य, चौहान, राठोर, परमार, कछवाहा, पृथ्वीहार, कु[...]
[...]र सिकरवार, खेमान, खीची, हांडा, रुहेला, पनवार, ज[...]
[...], भारद्वाज, अन्तर धानियाल, पन्त भरत कौशिक [...]
[...]तरे, मिहरोत्तरे, रांगढ़, कपूर, बड़गूजर, रघुवंशी, गाहड़[...]
[...]तिया, डोगरे, सेगरवाल, औबियान, तुवरे, इंदरखे, इदौ[...]
[...]निया, चतुरभुज, चौहान, गुडिया, हरदिया, धुरिया, रायकव[ार]
[...]फल, खैरवार, जयससवाल, द्विताया धरक, नरवरि[या]
[...]रया, बुधिया, इत्यादि, अधिकाधिक सख्या में हैं जो मालूम
[हो]ने पर फिर भविष्य में प्रकाशित करेंगे ।

मिहरा (महरा) परिचय

महरा—महाराज शब्द का अपभ्रन्स है, महाराज शब्द बा[...]
[...]ों और राजाओं का खिताब है. महरा: एक राजा का ना[म]
[...]ा महरा एक रियासत है जिसके राजा रामचन्द्र सिंह है जा[...]
[...]नदी सतलज है ।

हिसार के दारुल सल्तनत का नाम महरा था । जैसा [...]

ड राजस्थान में लिखा है कि गोगा चौहान महरा वाला देखो ड़राज पृ० १६८१ व १६८६। माहर महराज का अपभ्रंश है। र्थात् बिगड़ा हुआ है। राजा नन्द माहर और उसकी रानी यसोदा हरा लिखा है। देखो राग रत्नाकर पृष्ठ ३५ भागवत पृष्ठ १६८१ १६८५ महरा जाति को क्षत्रियों कि गणना में भी लिखा है। खो अकबमुल हिन्द। पृष्ठ २८ व टाड राजस्थान १३७ इशारा जा जनक का गोत्र गोतम था और मिहरों का गोत्र गोतम है। तः यह सिद्ध हुआ कि महरे मैथिल क्षत्रिय है। देखो जाति ास्कर पृष्ठ १०६ महरा वंश राजस्थान में प्रसिद्ध है। महरा मायूं के क्षत्रिय हैं।

राजवंश कत्यूरी राजा पूर्व काल में यहां खश जातियों को ाति कर स्थापित हुआ मिनरवाल रजवार इत्यादि इस कुल में ख्य हैं, दर्वार अस्कोट के रजवार इस कुल मे मुख्य है। चन्द जा चन्द्रवंशी कश्यप गोत्री राजा सोमचन्द्र दसवीं सदी में प्रयाग निकट भूसो से कुमायूं आये मात सौ वर्ष इस वंश ने राज किया द्र राजा कहे गये राजा साहब अल्मोडा और राजा काशीपुर इस श में शेष है।

रौतेला कुंवर, गुसाई, चन्द्र इत्यादि भी इसी वंश से हैं। ्रा कत्यालि, इनका मूल पुरुष जगदेव धारा नगरी की ार व पमार जाति का ठाकुर था। चन्द्रराजा के सैनिक जागीर र हुये।

नेगी-दारनगर से आए, कश्यप, भारद्वाज, गोतम गोत्री हैं। ई-कोई राजपूत मेवाड़, से आये हुये चौहान हैं यह राजा के नक हुये।

विष्ट चित्तौड़ से आए राजा सोमचन्द्र के दरबार में रहे वे

का इलाका था जो चम्बल नदी के दाहने किनारे उस जमुना के सङ्गम की ओर स्थित है तथा जयपुर राज्य में तुम्पर वाटी की छोटी सी जागीर वहां का जागीरदार अ इन्द्रप्रस्थ के प्राचीन सम्राटों का वंशधर मानता है : तोम में २१२ राज हुए हैं।

गुडिया गौड़ शब्द का अपभ्रंस भी माना जा सकता है से गोड़िया और गोडिया से गुढ़िया हो जाना असम्भव नही और सत्य है।

गौड क्षत्रिय है

यह जाति किसी समय राजस्थान में बहुत प्रसिद्ध थी. बंगाल के राजा इसी जाति के थे उन्हीं के नाम में उनकी राज का नाम लखनौती पड़ा, पुराने इतिहास से इस जाति को अ गौड़ करके लिखा है। सन् १८०६ में सेंधिया द्वारा इनका र नष्ट हुआ इनके अन्तिम राजा का नाम राधिका दास था, ज भास्कर पृष्ठ १०१।

हरदिया-क्षत्रिय वंश भूषण हरित ऋषि की सनतान कालन्जर में हरतिया कहलाते २ हरदिया कहने कहलाने लगे।

धुरिया-यह विश्व विदित क्षत्रियों का एक भेद है। यह राजपूतों के वंशधर हैं देखो जाति भास्कर पृष्ठ ११३॥

रैकवार तथा परिहार

विद्या वारिधि पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र जाति भास्कर नाम ग्रन्थ पृष्ठ १०५ पर लिखते हैं कि रैकवार परिहार भी रियास

२-पश्चात् जाति भास्कर पृष्ठ ६६ में लिखते हैं कि प
प्रतिहार वंशी क्षत्रिय हैं।

नोट:-यह ध्यान रहे कि रैकवार तथा परिहार एक ही
के बोधक हैं।

परिहार वंश में नाहड़राव प्रसिद्ध हुआ है. मण्डो
(मन्दोदरी) परिहारों की राजधानी था यह मारवाड़ का मुख्य
था. यह जोधपुर के उत्तर ५ मील में है परिहारों (रैकवारों)
राज्य महोबा भी था, जिसको चन्देलों ने युद्ध कर छीन लिया
कन्नौज के परिहार तथा रैकवार राजा हेरम्बपाल, विनायक
थे, इनके पास विष्णु की मूर्ति सोने की थी, जिसके लेकर
चन्देलों ने लेकर खजुराहो में मन्दिर बनाकर स्थापित किया है
टॉड राजस्थान पृष्ठ ४८० एक महर्षि रैकऋषि भी हुए हैं, जिन
कथा छान्दोग्योपनिषद में वर्णन है. यदि रैकऋषि का विवाह जा
श्रुति राजा की रूपवती कन्या के साथ हुआ था. कालान्तर
महर्षि रैकऋषि की सन्तान रैकवार के नाम प्रसिद्ध हुई हो य
सम्भव भी प्रतीत होता है।

खातखाप तथा खोखखाप

यह एक द्रविड़ देश की क्षत्रिय जाति है हजारी बाग के जि
में खैरागढ़ एक कस्बा है इस कस्बे को इन्हीं के पूर्वजों ने बसा
था यह अपने को क्षत्रिय कहते और मनाते हैं। जाति भास्कर
पृष्ठ ११६।

[illegible] तथा [illegible]

दसवीं शताब्दी में नरवर और ग्वालियर इन स्थानों में कछ
वाहों का राज्य था परन्तु ११२८ में परिहारों का अधिकार यह

में से एक पुरुष दीर्घ काम उन्नत ललाट वाला तलवार और धनुष बाण सहित प्रगट हुआ चतुराकृति होने से उसका नाम चौहान हुआ। और उसने दैत्यों को परास्त किया। परिहार परमार, सोलंखी चालुक्य ,और चौहान यह अग्नि वंशीक्षत्रिय है।

नोट—यह ध्यान रहे कि रैकवार तथा परिहार एक ही अर्थ के बोधक हैं।

लवकरया

यह कछवाहे राजपूतों का भेद है जो भगवान रामचन्द्र जी के पुत्र कुश के वशंज हैं।

केशन्निया

यह भी कछवाहे राजपूतों का एक भेद है।

नोट—धीवर शब्द संस्कृत का है। जिसको पद च्छा धीःबुद्धि वरःश्रेष्ट अर्थात् श्रेष्ट बुद्धिवाला मगर यहां कर्म पीछे दूषित बुद्धिवाला होकर यह नाम घृणित, और कलंकित हो रहा है। इस नाम को त्याग देना चाहिए) और अपने को राजपूत कहना और कहलाना चाहिये)।

कहार

कहार कायर से बना है। कायर का अर्थ नामर्द यानि लड़ाई से हथियार छोड़कर भागा हुआ अर्थात् जब पृथ्वीराज चौहान की शाहबुद्दीन गोरी से हार हुई उस समय जिन २ क्षत्रियों से क्षत्रियों ने डर.कर हथियार डाल दिये उनको "कायर" कहा गया और कायर का विगड़कर अपभ्रन्श रुप कहार होगया इससे पहले कहार का शब्द न पुराण व स्मृति व वेदो से कही प्रकट नहीं होता

ये क्षत्रिय प्रदीप दूसरा खण्ड पृष्ठ ७०४ अतएव कहार लोग
द से क्षत्रिय वंशी है। इनको क्षत्रियों धर्मनुसार यज्ञो पवित्रादि
पूर्ण कर्म करने चाहिये।

हरदिया—यथार्थ में क्षत्रिय वंश भूषण हरित ऋषि की
तान ही कालन्तर में हरतिया कहलाते कहलाते हरदिया कहने
लाने लगे।

भोईर या भोई शेष वंशोय कार्तवीर्य
राजा के वंशधर हैं।

(महाड़िक वंश) शेष वंशी कार्तवीर्य राजा के वंशधर महा-
क नाम से विख्यात है. मालवन्त गोत्र कात्यायनी देवी, खेचरी,
द्रा पक्षीरामंत्र, सिंहासन, ...ो वागल कोट, नीली, गद्दी,
ोलीध्वजा, नीला घोड़ा, लग्न कार्य में कदम्ब, अथवा पीपल
ा देवक, विजय दशमी को कटार अथवा तलवार का पूजन इसमें
हाडिक, गयली, भागले, भोईर, ठाकुर यह पांच वंश हैं।

राजा भीम चन्द्र वंशी मल्हाई के पेशे में बड़ा चतुर था। जो
हुत से भाई मल्हाई (केवट) का पेशा करते हैं। और प्रान्त लख-
ाऊ बनारस गोरखपुर इलाहाबाद में आबाद हैं यह सब राजा
भीम चन्द्रवंशी के वंश से हैं देखो टा. रा. पृ. १२९४ व १२९५।

शकेलन, भीम, शान्तनु, कश्यप आदि राजाओं की संतान हैं।
काशिप-काश्यप-काश्यप वंशीय क्षत्रिय हैं जाति अन्वेषण पृ. ६६७

बा० रघुनाथदास साहिब प्रधिक सर्वेराज ने देने इस जाति के
राजपूत होने की रोशनी डाली है।

ने लड़के लड़कियों का विवाह साल के किसी महीने में दोनों
र अपने सुभीते पर कर लिया करें शादी तो उस समय हो
ती है जब सम्बन्ध निश्चय हो जाता है।

दी के मौके पर बदरसूमात का त्याग किया जाय और अपने
बरबादी से बचाया जाय।

म के नौ जवानों अपनी जाति देश में कम नहीं देवियों की
ज इत्यादि की रक्षा के लिए बहादुर होकर पग ठीक कर
र्बानी के तैयार रहना चाहिये।

ड़के लड़कियों को बचपन से ही बहादुर बनने के लिए शिक्षा
ी चाहिए।

सी भी मनुष्य को जालिम, अत्याचारों के शिकार में फसा
कर उसकी जान व माल से हिफाजत करो।

ह्मण धर्म से किसी भी पतित जाति चाहे वह अपने को ब्राह्मण
या क्षत्री हर तरह को सहयोग देकर अपना संगठन करे खाने
ने के भेदभाव की जन्जीर को तोड़ा जाय।
यः जातियां पेशों के नाम से बनी हैं सब एक ही वृक्ष की शाख
छोटी बड़ी जाति कहनाधिककार है।
पना गोत जाति अपने नाम के साथ हर जगह प्रयोग किया जाय
ड़के लड़कियों में यही प्रचलन किया जाय।

सी को भी जाति के पेशे के ख्याल से अपने से ऊँची जाति
नीची जाति न माना जाय बल्कि उम्र के लिहाज से ही सर
काया जाय यह कमजोरी दूर करनेका नुसखा है बिला लिहाज
र्ग जाति हर एक की मौत में शामिल होना अपना कर्तव्य
मझा जाय।

मिस्टर टाड साहिब अपनीटाड राजस्थान कृत इतिहास
लिखते हैं। कि यह जाति राजपूत वंश से है देखो टा० रा० कृत
पृष्ठ १५४ सन १६०६ ई० हमारे इस समुदाय में से बहुत भाई क
प, कश्यप से हृण्यकश्यप हृण्यकश्यप से प्रल्हाद, से विरोचन दा
न्द्र, से राजबली की संतान से फैले हुए हैं। जो आगरा, झाँ
आदि जिलों में आबाद हैं।

नाथू महाराज

महाराजा भीम के पुत्र थे और वह जैसलमेर के राजा थे
थू का विवाह महाराजा बीकानेर की पुत्री के साथ हुआ थ
खो राजस्थान भाग दो पृष्ठ ५१८ से ५२२ तक।

कालूराव

महाराजा शाली वाहन के खानदान में जन्मे, कालूराव के
पिता का नाम भूपति था यह बड़े पहुँचे हुये महात्मा हो गये हैं।

प्रिय बन्धुओं सेवा में निवेदन यह है कि मुझ तोमर ने तुच्छ
साहस करके जाति वंशावलि लिखने का प्रयास किया यदि आपने
इसको अपना कर तोमर का उत्साह बढाया तो मैं शीघ्र ही आपकी
सेवा में जाति के कवियों व कवित्रियों के लिखित कविता, शायरी,
व भजन' इत्यादि से भरपूर एक पुस्तक प्रकाशित करने को
तैयार किया है, अपनी सुन्दर-२ रचनाये भेजिये।

समाज सेवा के ५८ साला अनुभव का निचोड़

अपना दीपक आप बनाओ अपने के ही शरण में जाओ दूसरे
की शरण में नहीं काम तो आपको करना है।

८२ महरोड़

१५ वीं शताब्दी में शिवराजसिंह इस वंशमें हुआ। पीछे

तिलोकचन्द बैंस का आश्रय लेकर अवध में आ बसे। ※ एक यह भी कहावत है कि तिलोकचन्द को एक बार मुसलमानों ने घेर लिया। उनमें से बहुत से भाग गये परन्तु उनकी [illegible] में जो वीर महरे थे उन्होंने महान वीरता द्वारा तिलोकचन्द की जान बचाई। इस उपलक्ष में तिलोकचन्द ने उन मेहरों को जो अब तक अवध में आबाद हैं। महरों से महरोड़ क्षत्रिय बना दिया। महरोड़ अब भूमि के स्वामी नहीं रहे इस हेतु उच्च कुलों में उनकी गणना न रही। [illegible] यह [illegible] की एक शाखा है। (शि० भा०)

१-बहम्ण धर्म के सिद्धान्तों से जितने दूर होते जाओगे उतना ही शान्ति के फाटक पर फलों फूलोगे ।

२-किसी भी मजहब को बुरी नजर से न देखकर उनमें जो बात अच्छी हो ग्रहण करके अमल किया जाय ।

३-जाति की पाती नकली और बनावटी दीवारों को तोड़कर हलका करके समाजवाद को जीवन देना मानवता का चिन्ह है ।

डा. दुर्गादत्त सिंह कुशान्न
कुशन भवन, नई बस्ती
बिजनौर (यू०पी०)

ीष्म प्रतिज्ञा करोगे ? क्या

मैं अपने को कश्यप राजपूत कहूंगा, लिखूंगा, लिखवाऊंगा, और अपने ाम के साथ अपना गोत्र (वंश) लगाकर ही व्यवहार में लाऊंगा ।

चाहते हो क्या
श्यप राजपूत जाति की प्रमाणिक वंशावली

हां तो फिर विलम्भ क्यों , आज ही मगवाकर पढ़िये हर घर में रखने य पुस्तक जिसके लिये आप बहुत दिनों से इन्तजार में थे मूल्य केवल पैसे न्योछार मात्र

त्ता—पवम भूषण विजयसिंह तोमर
कुन्दनपुर क्वाटर नं० २४
पुतलीघर के पास
मुरादाबाद।